

# NEXT IAS

## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

भारत में नदियों को जोड़ने पर परिचर्चा

---

[www.nextias.com](http://www.nextias.com)

## भारत में नदियों को जोड़ने पर परिचर्चा

### सन्दर्भ

- भारत में नदी जोड़ो की महत्वाकांक्षी परियोजना, जिसका उद्देश्य अतिरिक्त नदियों को जल की कमी वाली नदियों से जोड़ना है, को देश की जल समस्या के समाधान के रूप में प्रचारित किया जा रहा है।
  - हालाँकि, यह उत्कृष्ट विचार, जो दशकों से बन रहा है, मूल रूप से त्रुटिपूर्ण है और इससे पर्यावरण को गंभीर खतरा है।

### ऐतिहासिक संदर्भ

- नदियों को आपस में जोड़ने की अवधारणा 19वीं शताब्दी की है, जब सर आर्थर कॉटन ने गोदावरी और कृष्णा नदी घाटियों में सिंचाई बाँधों का डिजाइन तैयार किया था।
- समय के साथ यह विचार विकसित होता गया, जिसमें एम. विश्वेश्वरैया, के.एल. राव और कैप्टन दिनशाँ जे. दस्तूर जैसे इंजीनियरों का उल्लेखनीय योगदान रहा।
- इस अवधारणा का आधुनिक संस्करण, जिसे राष्ट्रीय जल ग्रिड के नाम से जाना जाता है, जल संसाधन मंत्रालय के अंतर्गत नदी-अंतर्संबद्ध परियोजना (ILR) के रूप में पुनः सामने आया।

### वर्तमान पहल

- 2002 में भारत के उच्चतम न्यायालय ने केंद्र सरकार को अगले 12-15 वर्षों के अंदर नदी जोड़ो परियोजना को पूरा करने का आदेश दिया।
  - इस आदेश के प्रत्युत्तर में भारत सरकार ने परियोजना से संबंधित कार्यों के लिए एक टास्क फोर्स तथा वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, पारिस्थितिकीविदों व अन्य लोगों को नियुक्त किया।
- वर्तमान में, भारत में नदी जोड़ो का प्रबंधन राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (NWDA) द्वारा किया जाता है, जिसकी स्थापना 1982 में हुई थी, और यह 1980 में तैयार की गई राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (NPP) का भाग है।

#### क्या आप जानते हैं?

- **हाशिम आयोग की रिपोर्ट (2004-05):** इसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया कि किन नदियों एवं किन स्थानों पर जल अधिशेष को स्थानांतरित किया जा सकता है और किन नदियों में तथा इन नदियों के किन स्थानों पर स्थानांतरित जल लिया जा सकता है।
- **राष्ट्रीय जल नीति (NWP) 2012** में जल के संरक्षण और कुशल उपयोग को बढ़ावा देने के लिए इसे आर्थिक वस्तु माना गया है।
- इसे जल संसाधनों की योजना और विकास तथा उनके इष्टतम उपयोग को नियंत्रित करने के लिए तैयार किया गया था।

### NPP के घटक

- **हिमालयी नदी विकास घटक:** इसमें 14 लिंक परियोजनाएँ शामिल हैं जिनका उद्देश्य हिमालयी नदियों के जल को भारत के उत्तरी और पूर्वी भागों में स्थानांतरित करना है।
- **प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक:** इसमें 16 लिंक परियोजनाएँ शामिल हैं, जो भारत के दक्षिणी भाग में नदियों को जोड़ने के लिए बनाई गई हैं, जो महानदी और गोदावरी नदियों से अधिशेष जल को कृष्णा, पेन्नार एवं कावेरी नदियों में स्थानांतरित करती हैं।

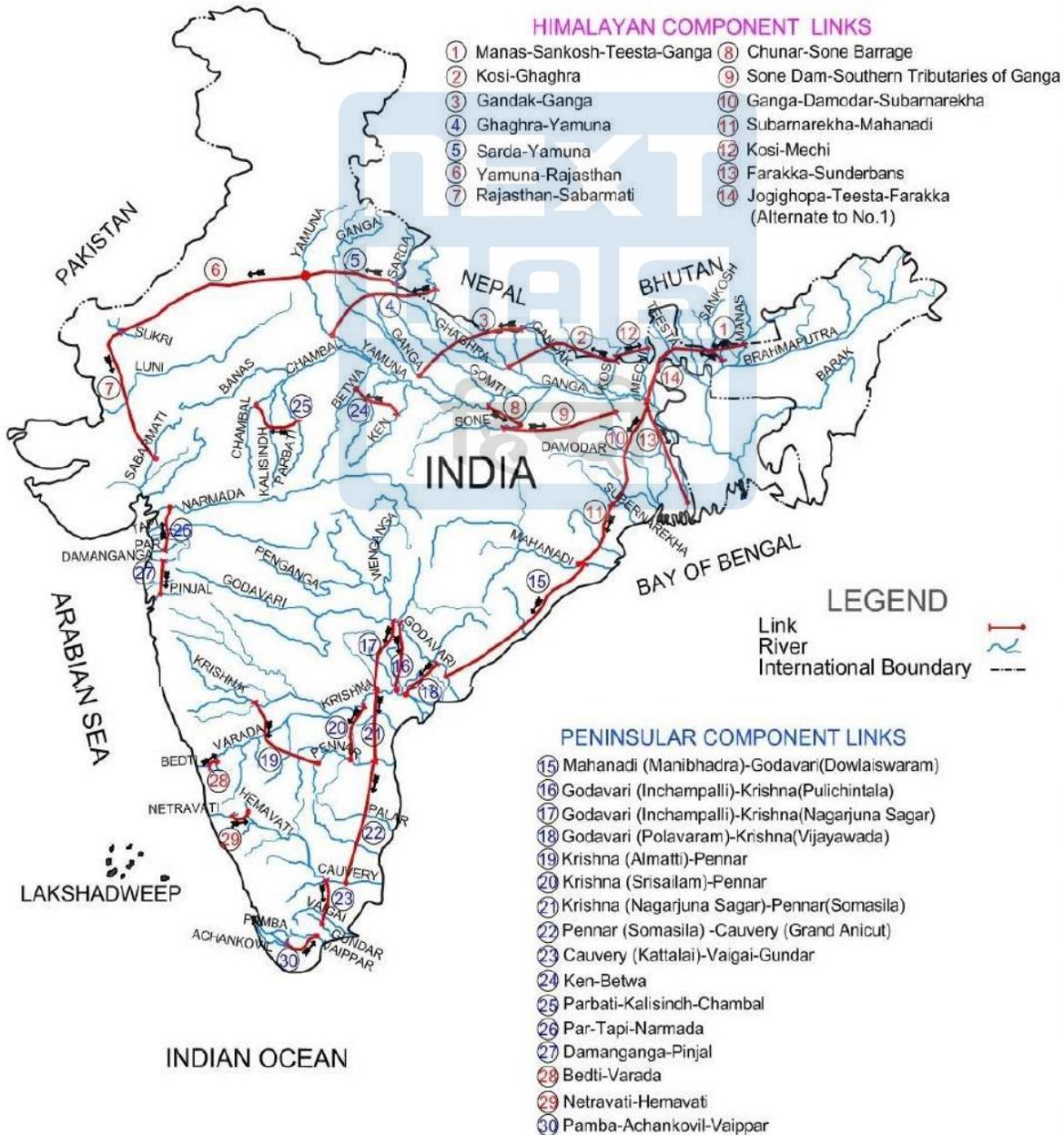
### प्रमुख परियोजनाएँ और उनकी स्थिति

- NPPके अंतर्गत चिह्नित 30 लिंक परियोजनाओं में से निम्नलिखित में उल्लेखनीय प्रगति हुई है:

- पूर्व-व्यवहार्यता रिपोर्ट (PFRs): सभी 30 लिंक परियोजनाओं के लिए पूर्ण।
- व्यवहार्यता रिपोर्ट (FRs): 24 लिंक परियोजनाओं के लिए पूर्ण।
- विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPRs): 8 लिंक परियोजनाओं के लिए पूरा किया गया।

### प्रमुख परियोजनाएँ

- केन-बेतवा लिंक परियोजना (KBLP) NPP के अंतर्गत क्रियान्वित की जाने वाली प्रथम परियोजना है। इसका उद्देश्य मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र को लाभ पहुँचाना है।
- इसका उद्देश्य 10.62 लाख हेक्टेयर भूमि को वार्षिक सिंचाई, 62 लाख लोगों को पेयजल उपलब्ध कराना तथा 130 मेगावाट विद्युत उत्पादन करना भी है।
- प्राथमिकता वाली परियोजनाएँ: केन-बेतवा लिंक परियोजना (KBLP) के अतिरिक्त, अन्य प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल (PKC) लिंक और गोदावरी-कावेरी लिंक शामिल हैं।



## अंतर नदी घाटीय जल स्थानांतरण (IBWT) की आवश्यकता

- क्षेत्रों/घाटियों में जल की कमी की स्थिति पर नियंत्रण पाने तथा जल उपयोगिता को बढ़ाने और जल अधिशेष क्षेत्रों में जल की बर्बादी को कम करने के लिए निम्नलिखित तरीके से कार्य करना आवश्यक है:
  - स्थान और समय में वर्षा और उपलब्ध जल संसाधनों में भारी भिन्नता;
  - जल अधिशेष बेसिनों से जल की कमी वाले बेसिनों/क्षेत्रों की ओर जल का मोड़ना;
  - अधिशेष जल का उपयोग जो अन्यथा बिना उपयोग किये समुद्र में प्रवाहित हो जाता है;
  - जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रतिकूल प्रभावों को अल्पावधि और दीर्घावधि में कम करना;

## नदी जोड़ो परियोजना के लाभ

- **जल उपलब्धता:** यह सूखे और बाढ़ दोनों समस्याओं का समाधान करते हुए, क्षेत्रों में जल का समान वितरण सुनिश्चित करता है।
- **कृषि उत्पादकता:** सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।
- **पेयजल आपूर्ति:** लाखों लोगों को विश्वसनीय पेयजल उपलब्ध कराता है।
- **जलविद्युत उत्पादन:** जलविद्युत परियोजनाओं के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन में योगदान।

## चुनौतियाँ और चिंताएँ

- **पारिस्थितिक असंतुलन:** नदियों को आपस में जोड़ने से नदियों का प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो सकता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता प्रभावित हो सकती है। नदी के मार्ग में परिवर्तन से विभिन्न प्रजातियों के आवास नष्ट हो सकते हैं।
  - उदाहरण के लिए, केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना में पन्ना टाइगर रिजर्व के अंदर एक बाँध का निर्माण शामिल है, जिससे जलमग्नता और जैव विविधता की हानि के बारे में चिंताएँ उत्पन्न हो गई हैं।
- **वित्तीय व्यवहार्यता:** परियोजनाओं के कार्यान्वयन और रखरखाव से जुड़ी उच्च लागत।
  - केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना, जिसकी अनुमानित लागत लगभग 45,000 करोड़ रुपये है, को विशेषज्ञों की आपत्तियों का सामना करना पड़ा है तथा जलविद्युत परियोजनाओं के लिए कठोर कानूनी शर्तों को दरकिनार किया गया है।
- **अंतरराज्यीय विवाद:** राज्यों को अपने-अपने क्षेत्रों में आपूर्ति, सिंचाई, नहरों, जल निकासी, तटबंधों, जल भंडारण और जल शक्ति में जल का उपयोग करने का अधिकार है।
  - जल को भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II में सूचीबद्ध किया गया है, जो राज्य सूची है।
  - हालाँकि, केंद्र सरकार को सातवीं अनुसूची की सूची I के अंतर्गत अंतर-राज्यीय नदियों और नदी घाटियों को विनियमित और विकसित करने की शक्ति प्राप्त है।
- **सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:** 5.5 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत में सामाजिक, पर्यावरणीय और परिचालन व्यय शामिल नहीं हैं, जिसका भार अंततः करदाताओं पर पड़ेगा।
  - समुदायों का विस्थापन, आजीविका की हानि और सांस्कृतिक विरासत स्थलों का विनाश महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- **समुदायों का विस्थापन:** व्यापक स्तर की परियोजनाओं के लिए प्रायः स्थानीय समुदायों को विस्थापित करना पड़ता है, जिससे सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।
  - पुनर्वास प्रक्रिया जटिल हो सकती है और हमेशा उचित या पर्याप्त नहीं हो सकती।

- **जलवायु परिवर्तन प्रभाव:** नदी प्रणालियों में परिवर्तन से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव बढ़ सकते हैं, जैसे बाढ़ और सूखे की आवृत्ति एवं तीव्रता में वृद्धि।
  - इससे पहले से ही सुभेद्य क्षेत्रों पर और अधिक दबाव पड़ सकता है।
- **वनों की कटाई और आवास की क्षति:** नहरों और जलाशयों के निर्माण के लिए व्यापक स्तर पर वनों की कटाई की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप वन्यजीवों के आवास का नुकसान होता है।
  - यह मृदा क्षरण और क्षरण में भी योगदान दे सकता है।
- **जल गुणवत्ता संबंधी मुद्दे:** विभिन्न नदियों के जल के मिश्रण से जल की गुणवत्ता में परिवर्तन हो सकता है, जिससे मानव और पशु दोनों प्रभावित होते हैं।
  - एक नदी के प्रदूषक दूसरी नदी को दूषित कर सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी खतरा उत्पन्न हो सकता है।

### जलवायु ब्लाइंड-स्पॉट

- नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि नदी जोड़ो परियोजनाएँ अनजाने में जल संकट को कम करने के बजाय उसे बढ़ा सकती हैं।
- प्राकृतिक जल प्रवाह में परिवर्तन करके तथा जल-मौसम विज्ञान प्रणालियों को बाधित करके, नदियों को आपस में जोड़ने से मानसून पैटर्न में परिवर्तन जैसे अनपेक्षित परिणाम सामने आ सकते हैं।
- ये परिवर्तन, बदले में, जल की कमी की उन्हीं समस्याओं को खराब कर सकते हैं, जिन्हें हल करने का लक्ष्य इन परियोजनाओं में रखा गया है।

### निष्कर्ष और आगे की राह

- यद्यपि जल संकट को हल करने के लिए नदियों को जोड़ने का विचार आकर्षक है, लेकिन यह पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक लागतों को नजरअंदाज करता है।
- भारत की जल चुनौतियों का समाधान करने के लिए, प्राकृतिक और मानवीय परिदृश्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचाए बिना, सतत एवं स्थानीय समाधानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, जलग्रहण प्रबंधन के लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है।
- केवल बड़े पैमाने की अवसंरचना परियोजनाओं पर निर्भर रहने के बजाय, ऐसे सतत विकल्पों पर विचार करने की आवश्यकता है जो जलवायु, जल संसाधनों और पारिस्थितिकी प्रणालियों के बीच जटिल अंतर्सम्बन्ध को ध्यान में रखते हों।

Source: TH



### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न.** भारत में नदी जोड़ो परियोजनाओं के संभावित पर्यावरणीय परिणामों की पारिस्थितिकी, सामाजिक और आर्थिक निहितार्थों पर विचार करते हुए आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।